पंचम अध्याय

" 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"

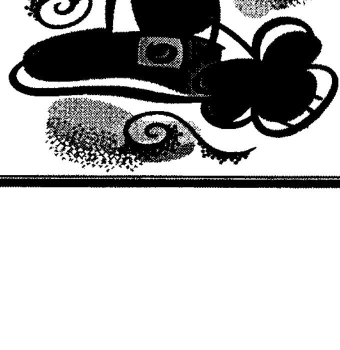

पंचम अध्याय

" 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ "

प्रस्तावना -

आज का युग विज्ञान युग है। विज्ञान के नये-नये अविष्कारों ने मानव को प्रगतिशील बना दिया है। प्रगतिशील जीवन में अनेक जटिलताओं का भी निर्माण हुआ है। आधुनिक युग में मानव विज्ञान द्वारा प्रगति की ओर अग्रेसर है। लेकिन विज्ञान भी आज अपने विशिष्ट गुणों के कारण युद्ध, प्रदुषण, विनाश व संहार आदि समस्याओं से ग्रस्त हैं। आज विशाल मानव जीवन को समस्या जैसे छोटे शब्द ने घेर लिया है। मानव जितना समस्याओं से मुक्त होने का प्रयास करता है, उतना ही उसमें धसता ही जा रहा है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि अगर समस्याएँ ही निर्माण न होती तो मानव जाति का विकास न होता। जब भी मनुष्य के सामने कोई समस्या उभर आती है तो वह उससे मुक्त होने का प्रयास करता है।इस दृष्टि से समस्या आवश्यकता की जननी ही है। मानव जीवन का ऐसा कोई भी अंश नहीं है कि जिसे समस्याओं ने घेर न रखा हो। हर वक्त नई-नई समस्याएँ निर्माण होती है उन्हें सुलझाने में मानव दिन-रात व्यस्त रहता है। इसी मानवी जीवन की वास्तविकता को साहित्य ने भी अपना विषय बना दिया है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के जाने-माने साहित्यकार गिरिराज किशोर ने भी अपना महाकाव्यात्मक और बहुचर्चित उपन्यास 'परिशिष्ट' में अनेक समस्याओं को वाणी दी है। विवेच्य उपन्यास में प्रतिबिंबित समस्याएँ व्यक्ति, परिवार और समाज से जुड़ी है। यह समस्याएँ उपन्यास में प्रसंगानुरूप और अनायास ही आयी है। प्रस्तुत समस्याओं का एक अलग और विशेष महत्त्व है। ये समस्याएँ ही विवेच्य उपन्यास कें मूलाधार से जुड़ी होने के कारण इस अध्याय में प्रस्तुत समस्याओं का विस्तार से विवेचन किया है। वह इस प्रकार है -

5.1 नारी शोषण की समस्या -

संसाररूपी रथ के दोनों पहियों में से एक पहियाँ है - नारी। पुरुषप्रधान समाजव्यवस्था में नारी को कमजोर माना जाता है। प्राचीन काल से ही नारी का पुरूषों द्वारा शोषण होता रहा है। नारी शोषण एक निरंतर चलती प्रक्रिया है। सदियों से ही नारी को पुरुष के उपभोग की वस्तु माना जा रहा है। पुरुष नारी को निजी संपत्ति के रूप में देखता है। नारी को ही पुरुष के अनुचित व्यवहार को चुपचाप सहना पड़ता है। इसी कारण उसका शोषण होता है। अत: इस समस्या से सामना करना पड़ता है।

प्रस्तुत उपन्यास में बाबूराम की बहन का पति अपनी पत्नी को खुद की व्यक्तिगत संपत्ति मानता हुआ, उस पर अमानवीय अत्याचार करता है। एक बार तो वह शराब के नशे में जुआ खेलता है। वह इस हद तक गिरता है कि खेलते-खेलते अपनी पत्नी को दाँव पर लगाता है। दो सौ रूपये के लिए अपनी पत्नी को जुअे में हार जाता है। जिस आदमी के पास बाबूराम की बहन होती है वह बाबूराम के पिता को लिखता है- "आपकी बेटी को आपके दामाद ने दो सौ रुपये में छोड़ दिया ... आप चाहें तो दस दिन के अन्दर चुकता करके छुड़ा लें नहीं तो हम जिम्मेदार नहीं होंगे...।"[1] बाबूराम के पिता दो सौ रुपयो देकर अपनी बेटी को घर ले आते हैं। यहाँ भी उसका पति आता है मारपीट तथा गाली-गलौच करने लगता है। अत: स्पष्ट है कि नारी को पुरुष खुद की संपत्ति के रूप में देखता है। जिसका वह अपने मन के अनुसार उपयोग करवाना चाहता है। एक निर्जीव वस्तू के समान उसका क्रय-विक्रय होता है।

अनुकूल के जीजा भी अपनी पत्नियों से शराब के नशे में चूर होकर अनुचित व्यवहार करते है। वे अपनी पत्नियों को हमेशा गाली-गलौच करते हैं, कभी-कभी मारपीट भी करते हैं। अनुकूल के छोटे जीजा अपनी पत्नी को शराब पीने को कहते हैं नहीं पीती तो डाँटते है। जोश में आकर मारपीट करते हैं। अत: स्पष्ट है

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 136

कि पुरुष वर्ग नारी पर अपना रोब बनाए रखना चाहता है और उसका शोषण भी करता है। नारी भी उसे एक गऊ की तरह चुपचाप सहती है।

विवेच्य उपन्यास में मिसिरजी का भी चित्रण आया है। उनका बेटा विदेश में रहता है। जब वह भारत में आता है तो उसकी शादी जल्दबाजी में की जाती है। उसे पत्नी भी सुंदर और गुणी मिल जाती है। लेकिन पन्द्रह दिन के बाद वह बिजली का करेंण्ट लगकर मर जाती है। असली बात कुछ और ही थी। मिसिरजी का लड़का किसी विदेशी लड़की को चाहता था। दूसरी बात यह थी कि उनके बहू के पिता ने शादी में जो लेन-देन का वादा किया था वह उनसे पूरा नहीं हुआ था। इसी कारण मिसिरजी नाराज थे और बहू को बिजली का करेण्ट लग गया । इससे यह स्पष्ट है कि शादी में किए वादे पूरे नहीं हुए तो नारी को बिजली का करेण्ट लग जाता है। आग से जलकर या पानी में डूबकर मरना पड़ता है या मरवाया जाता है? यह भी एक अनुसंधान का विषय है।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में भी नारी उपेक्षित तथा पुरुष अत्याचारों की शिकार हुई है। समय के साथ-साथ समाज में परिवर्तन हो रहा है लेकिन नारी विषयक परंपरागत पुरुषी मानसिकता तथा मान्यताओं में कोई बुनियादी परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता। इसलिए समाज में नारी आज भी शोषित दिखाई देती है। संक्षेप में पुरुष का नारी की ओर देखने के संकुचित दृष्टिकोन में परिवर्तन होना आवश्यक है अन्यथा हमेशा से ही नारी जाति का शोषण होता रहेगा।

5.2 अंधविश्वास की समस्या -

भारतीय समाजव्यवस्था में अंधविश्वास की समस्या परंपरा से चली आ रही है। आधुनिक युग में भी यह प्रचलित दिखाई देती है। अंधविश्वास का गहरा प्रभाव वर्तमान ग्रामीण जीवन पर दिखाई देता है। जिन कार्यो में भाग्य, जादू-टोना, व्रत-उपवास, साधु-फकीर पर विश्वास रखा जाता है वे सब अंधविश्वास के अंतर्गत ही आते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में अंधविश्वास का चित्रण देखने को मिलता है। सिरसाँ गाँव के दलित लोगों में यह भ्रम है कि शहर में जादू की पढ़ाई होती है। अगर लड़कियाँ पढ़ गयी तो आग लग जाती है। यह लोग शहर की शिक्षित औरतों से बहुत डरते हैं। गाँव का आदमी नीलम्मा से कहता है- "शहर की पढ़ी-लिखी औरतन से हमें बहुत डर लागत है हम जानित हैं कि शहरन में जादू की पढ़ाई पढ़ावा जात है।"[1] इन लोगों के अनुसार यह पढ़ी-लिखी औरते आदमी को बकरा बना देती है। और अपने पीछे दौड़ाती हैं। अत: स्पष्ट है कि सवर्ण लोगों द्वारा फैलाये भ्रम और जादू के डर से दलित लोग पढ़ाई से दूर रहते हैं। आज का युग विज्ञान का है फिर भी अज्ञान एवं अशिक्षा के कारण गाँवों के दलित लोग अंधविश्वासी हैं।

आई.आई.टी. में पढ़नेवाला राजू बीमारी के कारण अस्पताल में दाखिल होता है। उसके पिताजी उसे देखने आते तब अपने साथ भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर से काला धागा ले आये थे। उनकी मान्यता थी कि राजू के हाथ में धाँगा बाँधते ही वह ठीक हो जाएगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता। बीमारी में राजू की मौत हो जाती है। अत: स्पष्ट है कि भारतीय समाज में देवी देवताओं पर विश्वास रखा जाता है। उससे मनुष्य अकर्मण्य होता है। बीमारी में भी लोग साधु-फकीर जो उपाय बताते हैं उसका पालन करते हैं, लेकिन अंतत: हाथ निराशा ही आती है।

जब अनुकूल का जन्म होता है तब इत्तफाक से उसके पिता बावनराम को पदोन्नति मिलती है। उन्हें लगता है कि अनुकूल के भाग्य के कारण ही ऐसा हुआ। इसलिए पदोन्नति के कारण प्राप्त पैसा वे अपनी बेटे की जन्म की खुशी में बिरादरी में उड़ा देते हैं। अत: स्पष्ट है कि आज भी समाज में लोग भाग्यवाद की धारणा को मानते हैं। इसी कारण बावनराम को मिले पैसे अनुकूल के भविष्य के लिए उपयोगी न होकर फिजूल बातों में ही खर्च होते हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 199

आई.आई.टी. का छात्र रामउजागर मानसिक संतुलन बिघड़ने से एक साल की छुट्टी लेकर गाँव जाता है। उसके घरवाले उसे गाँव के एक प्रसिद्ध बाबा के पास ले जाना चाहते हैं। उन लोगों में यह भ्रम है कि वह बाबा भूत-प्रेत को उतरता हैं। उसके उपाय से रामउजागर ठीक हो जायेगा। लेकिन शिक्षित रामउजागर इस बात को स्पष्ट विरोध करता है। अत: स्पष्ट है कि परिस्थिति के सामने मनुष्य इतना विवश हो जाता है कि वह अंधविश्वासों का सहारा लेता है।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि भारतीय समाज के लोग अपने आप को प्रगतिशील क्यों न माने लेकिन अंधविश्वास का प्रभाव आज भी वर्तमान जीवन पर स्पष्टता से परिलक्षित होता है। ग्रामीण लोगों में शिक्षा का प्रसार होने से अंधविश्वास की तीव्रता थोड़ी कम होती दिखाई देती है।

5.3 व्यसनाधीनता की समस्या -

अपना गम भूलाने के लिए, व्यथा से छुटकारा पाने के लिए तथा आधुनिक युग में फैशन के रूप में लोग व्यसनों के अधीन हो जाते हैं। व्यसन अनेक प्रकार के होते हैं। शराब, ड्रग्ज, सिगार, पान का सेवन करना आदि। व्यसन के अधीन होकर व्यक्ति अपने आप का नियंत्रण खो बैठता है। परिणामत: समाज में व्यसनों के कारण परिवारों का विघटन होता दिखाई देता है।

प्रस्तुत उपन्यास में गिरिराज किशोर जी ने व्यसनाधीनता की समस्या पर प्रकाश डाला है। नशापान वह स्थिति हैं जिसमें शराब पिनेवाला अपने आप पर नियंत्रण नहीं कर सकता। शराब का आदती बन गया मनुष्य शराब के लिए कुछ भी कर सकता है। अपने परिवार के सदस्यों से पशुतुल्य व्यवहार भी करता दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास में ऐसे ही एक व्यक्ति का संदर्भ प्राप्त होता है। यह व्यक्ति शराब के नशे में चूर होकर रोज अपनी पत्नी को मारपीट करता है। एक बार तो वह हद ही कर देता है। शराब के नशे में अपनी पत्नी को ही दाँव पर लगाता है और हार जाता है। बाबूराम अनुकूल को कहता है - "हमारी जात ही ऐसी ... पीना, खेलना, औरतों को मारना,

बेचना ... इतना चलता है कि बापू हमेशा कहा करते थे कि मेरा बस चला तो मैं अपनी राजकुमारी को बिरादरी से बाहर बिहाऊंगा।"[1]

अनुकूल के दोनों जीजा जी भी शराब का सेवन करते हैं। शराब के नशे में वे अपनी पत्नियों को गालियाँ देते हैं। अनुकूल के छोटे जीजा नशे में छोटी जीजी को भी पीने को कहते हैं। कभी-कभी पीटते भी है।

अत: स्पष्ट है कि शराब की नशा के कारण परिवार विघटन के कगार पर खड़े दिखाई देते हैं। व्यक्तियों के आपसी संबंधो में कडुआहट पैदा हो रही है। आर्थिक स्थिति बिकट हो जाती है। सत्य है कि मनुष्य पहले शराब पिता है लेकिन बाद में शराब ही उसे पिती है।

आई.आई.टी. में शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों में भी व्यसनाधीनता दिखाई देती है। खन्ना और उसके साथी छात्रावास के परिसर में सिगारेट का सेवन करते हुए घूमते हैं। वे कल्ब में भी जाते हैं। क्लब की लड़कियों के साथ डान्स भी करते हैं। खन्ना अनुकूल को कहता है - "तफरीह की जरूरत हो तो हमारे साथ चलो, गाना भी सुनो और गिनती गिनने से छुट्टी पाओ। वे लोग एस.सी., एस. टी. वगैरह नहीं मानतीं। पैसा देखती हैं। तुम्हारा पैसा हम देंगे।"[1] अत: स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति से संपन्न परिवार के बच्चों पर अपने माता-पिता का ध्यान नहीं रहता। वे बच्चों को जब चाहे और जितना चाहे पैसे देते हैं और ऐसे बच्चे अपनी तथा अपने दोस्तों की जीवन यात्रा को गुमराह करा देते हैं। आज की युवा पीढ़ी अधिकतर व्यसनाधीनता की समस्या से ग्रस्त है। इसके स्पष्ट संकेत प्रस्तुत उपन्यास में दिखाई देते हैं।

5.4 बालविवाह की समस्या -

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक भारतीय समाज में विवाह संस्था का अस्तित्व बना दिखाई देता है। अपने सामाजिक तथा धार्मिक कर्तव्यों के निर्वाह के

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 136-137
2. वही - पृष्ठ - 133

लिए व्यक्ति विवाह करता है। सामाजिक स्वास्थ्य के लिए विवाह अनिवार्य है। आधुनिक युग में विवाह संस्था में अनेक स्थानों में बदलाव आ रहे हैं। आज विधवा विवाह, पुनर्विवाह, प्रेम विवाह हो रहे हैं जो समाज के आधुनिकीकरण का लक्षण है। लेकिन आज भी समाज में बालविवाह, अनमेल विवाह, जरठ विवाह होते हैं जो एक समस्या के रूप में सामने आते हैं।

'प्रस्तुत' उपन्यास दलित लोंगों के जीवन की समस्याओं पर आधारित है। इसमें लेखक ने दलित लोगों के वास्तविक जीवन को उद्‌घाटित किया है। दलितों का जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ दिखाई देता है। उसमें से एक समस्या है बालविवाह की।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित दलित समाज में बालविवाह का प्रचलन है। बावनराम का बेटा अनुकूल जब आठवीं पास होता है तब से ही उसके विवाह के रिश्ते आने लगते हैं। लेकिन बावनराम अनुकूल को आगे पढ़ाना आवश्यक समझते हैं। वे उसे इंजीनिअर के रूप में देखना चाहते हैं इसलिए वे उसका विवाह करना उचित नहीं मानते। उनकी यह मान्यता है कि ऐसा विवाह 'शारदा ॲक्ट' के विरुद्ध होगा। बिरादरी के बाकी लोग कहते हैं कि हमारा-तुम्हारा ब्याह भी तो 'शारदा ॲक्ट' के खिलाफ हुआ था, हम कभी जेल नहीं गए। अनुकूल के विवाह के लिए चौधरी रामप्रसाद जैसे बड़े घरवाले का रिश्ता आता है। लेकिन बावनराम अनुकूल की शादी के लिए तैयार नहीं होते। बिरादरी वाले उन्हें भला-बूरा कहते हैं। अनुकूल की माँ, बहने, जीजा जी भी इस विवाह के पक्ष में होते है। बावनराम के ना कहने से वे लढ़ाई-झगडे पर उतरते हैं।

अत: स्पष्ट है कि अज्ञान, अशिक्षा, परंपरागत मान्यताएँ, रूढ़ि आदि के कारण दलित समाज में बालविवाह होते आ रहे हैं। आज शिक्षा के प्रसार के कारण स्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन होता दिखाई देता है।

5.5 छुआछूत की समस्या -

प्राचीन काल से ही भारतीय समाजव्यवस्था में वर्णव्यवस्था का अस्तित्व रहा है। उससे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि का स्थान निश्चित हो गया। शुरूआती दौर में वर्णव्यवस्था कर्म के अनुसार थी बाद में यह जन्म के अनुसार मानी जाने लगी। समाज के कुछ लोगों की स्वार्थी वृत्ति के कारण शूद्रों को अत्यंत निम्न स्थान और हीन दर्जा दिया गया। ब्राह्मण आदि स्वयं को ऊँच दर्जे के समझने लगे। इसी ऊँच-नीचता की प्रवृत्ति से समाज में छुआछूत की समस्या ने उग्र रूप धारण किया है। आज भी गाँवों तथा शहरों में ऊँच-नीचता, स्पृश्य-अस्पृश्यता, पवित्र-अपवित्रता की भावना दिखाई देती है। सदियों से ही दलितों को अछूत माना गया हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में भी छुआछूत की समस्या का चित्रण दिखाई देता है। अनुकूल के आई.आई.टी. प्रवेश के संबंध में बावनराम सांसद चौधरी को मिलने आते हैं। वे अन्य लोगों के साथ चौधरी के घर में ठहराते हैं। अनुकूल के नहाते समय एक पंडित की साबुणदानी अंदर रहती है। वह पंडित साबुणदानी लाते समय भीगे फर्श पर पड़े अनुकूल के पैरों के निशानों को बचाकर चलता है। उस आदमी को यह लगता है कि अनुकूल के पैरों के निशानों पर पाँव पड़ने से उसे कहीं छूत न लगे।

अनुकूल और बाबूराम यह दोनों दलित छात्र छात्रावास में घूमते हैं तो कहीं सवर्ण छात्र उन्हें अपने पास बुलाकर वहाँ आती हुई गंदगी की बू पहचानने को कहते हैं। उन छात्रों का मानना है कि इस गंध को यही दोनों अच्छी तरह से पहचान सकते हैं क्योंकि उनकी जाति दलित है। उनकी जाति के संदर्भ में एक छात्र कहता है- "मिस्टर अनुकूल एण्ड़ कम्पनी ... जरा यहाँ आइए। हमें आपके एक्सपर्ट ओपिनियन की बहुत सख्त जरूरत है।"[1] बाबूराम एक छात्र से हाथ मिलाता है तो वह छात्र अपना हाथ उलट-पुलटकर देखता है। छात्रावास में सिर्फ दलित छात्रों को ही अपने-अपने बर्तन

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 115

साफ करने को कहा जाता है। गिरिराज किशोर ने लिखा है- "राष्ट्रीय स्तर पर ऊँच-नीच और छुआछूत का विष फैला है। आरक्षणवादी नीतियों के बावजूद इन्सान को जिस अमानवीय स्थिति का सामना करना पड़ता है, वह हर एक को अपने गिरहबान में मुँह डालकर झाँकने के लिए मजबूर करती है।"[1]

अत: स्पष्ट है कि चाहे हम खुद को कितने भी पढ़े-लिखे समझे लेकिन दलितों के प्रति देखने की सवर्णो की घृणित मानसिकता में आज भी विशेष रूप से परिवर्तन नहीं आया है।

5.6 आरक्षण की समस्या -

आजाद भारत में सभी लोगों का समान हित हो इस दृष्टि से प्रयास किए गए। दलित, अस्पृश्य, निम्न जातियों को सवर्ण लोगों के साथ लाने के लिए विशेष योजनाओं का प्रयोग किया जा रहा है। डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर जी के प्रयासों से दलितों को आरक्षण की सुविधा दी गई। दलितों को शिक्षा संस्था में प्रवेश, नौकरियों, राजनीतिक क्षेत्र तथा सरकारी संस्थाओं में आरक्षण देकर उनकी स्थिति में परिवर्तन करने का, उन्हें न्याय दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन दूसरी ओर इससे कुछ समस्याएँ भी निर्माण हो गई। "एक ओर अवसर की कमी और दूसरी ओर एक वर्ग के लिए आरक्षण की सुविधा ने हजारो वर्षो से विशिष्टता और उत्कृष्ठता का बोध पाले सवर्णो को मानसिक रूप से आहत किया और अनुसूचित जातियों के लिए नये किस्म की घृणा और क्रोध की अभिव्यक्ति हुई।"[2] अत: स्पष्ट है कि सवर्ण लोगों ने आरक्षण को अपने प्रति अन्याय ही माना। जातीयता की भावना कम होने के अलावा बढ़ गयी। दूसरी ओर दलितों में जिन लोगों को आरक्षण का लाभ हुआ। उन्होंने अपनी जाति के लोगों में परिवर्तन करने का प्रयास ही नहीं किया। सांसद राजेद्रसिंह बावनराम को कहते है - "टॉनिक-पर-टॉनिक भी दिये जा रहे हैं... लेकिन यह उपर लाने की टेर

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, मुखपृष्ठ से
2. डॉ.सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर, पृष्ठ. 51

वैसी-की-वैसी बनी है। जो उपर पहुँच गये हैं वे रस्सी डाल-डालकर अपनों को ऊपर खींच रहे हैं... दूसरों की कन्नी काट देते हैं। आप लोगों के बीच भी तो सवर्ण होते जा रहे है।"[1] अत: यहाँ आरक्षण का विरोध करनेवाली सवर्ण मानसिकता के साथ आरक्षण का लाभ उठानेवाले दलितों की वास्तविक स्थिति को भी उद्घाटित किया है। अर्थात दलितों में भी ब्राह्मण पैदा हो रहे हैं। वे समाज की ओर ध्यान न देकर अपने व्यक्तिगत विकास और प्रगति की ओर ही ध्यान देते हैं।

बावनराम दलित जाति के हैं। वे अपने बेटे अनुकूल को आई. आई. टी. से इंजीनियर बनाना चाहते हैं इसलिए वे आरक्षण का लाभ लेना जरूरी समझते हैं। वे अपने विभाग के सांसद को मिलने के लिए दिल्ली जाते है। लेकिन सांसद के घर से लेकर सरकारी कार्यालयों तक हर कोई उनकी जाति को कौसता है, भला-बुरा कहता है। उन्हें जगह जगह सरकारी पंडित, सरकारी महादेव, सरकार के हकीकी दामाद कहकर अपमानित किया जाता है। अत: यहाँ आरक्षण का लाभ लेनेवालों के प्रति गैरदलित लोगों का हीनता भाव परिलक्षित होता है।

दलित, निम्न जाति के छात्र, ऊँचे वर्ग के छात्रों की बराबरी करे इसलिए आरक्षण की सुविधा दी गई है। प्रस्तुत उपन्यास में दलित तथा निम्न जाति के छात्र आरक्षण के प्रावधान से आई.आई.टी. में प्रवेश पाते हैं। लेकिन ऐसी संस्थाओं में दलित छात्रों को व्यंग्य से वी.वी.आय.पी. याने अत्याधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति कहा जाता है। उच्चवर्गीय छात्रों का मानना है कि, आयेंगे चोर दरवाजे से और बन जाए सी. वी. रमण। ऐसी संस्थाओं दलित छात्रों को अपनी जाति के कारण अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती है। यहाँ के उच्चवर्गीय छात्र, अध्यापक तथा अधिकारी उन्हें जातीयवादी दृष्टि से देखते हैं।

सवर्ण लोगों का मानना है कि आरक्षण से कार्यकुशलता बाधित होती है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 38

कार्यक्षमता तथा बौद्धिक दृष्टि से कमजोर लोग महत्त्वपूर्ण पदों पर पहुँचकर पूरी व्यवस्था को कमजोर कर देते हैं। आरक्षण से कभी-कभी अयोग्य लोग भी आगे निकल जाते है। "अभी हमारे यहाँ प्रोमोशन हुए थे। अच्छे-अच्छे सीनियर और नोटिंग-ड्राफ्टिंग के हकीम रह गये। एस.सी. होने के कारण नाख्वान्दा आगे निकल गये।"[1] इस तर्क में दम भी है लेकिन सदियों से दलित और शोषित, अनुसूचित जातियाँ शैक्षिक एवं आर्थिक साधनों की दृष्टि से इतने पिछड़े है कि बिना आरक्षण के सिवा वे उच्चवर्ग से बराबरी नहीं कर सकते। सवाल बराबरी का नहीं है तो समाज में आदमी को आदमी के तरह सम्मानजनक स्थान मिलें, उन्नति हो, साथ-साथ गरीब दलितों के बेटे भी पढ़े-लिखे और उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। लेकिन आरक्षण की बात को लेकर अन्य वर्ग के लोग नाराज दिखाई देते हैं। ऊँचे वर्ग के लोगों को यह अहसास होने लगा है कि अब दलित पहले जैसे हमारी बात न मानेंगे न सुनेंगे। अत: इसके पीछे मूल रूप में आरक्षण ही है ऐसा उनका मानना है।

5.7 जातीयवाद की समस्या -

भारतीय समाजव्यवस्था जातीयता पर आधारित है। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक लोग जातिव्यवस्था को निभाते आये है। जातिव्यवस्था में प्रथा, परंपरा के साथ ऊँच-नीचता की भावनाएँ भी अंतर्भूत है। हिंदू समाज स्पृश्य-अस्पृश्य, छुत-अछूत, सवर्ण-दलित, ऊँच-नीच आदि रूपों में विभक्त हुआ है। जातीय भेदाभेद से समाज में परस्पर संघर्ष की भावना को बल मिलता है। जातिव्यवस्था के कारण ही 'दलित' समाज का एक अंग होते हुए भी उपेक्षित रहा है। म.फूले, म.गांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर, राजर्षि शाहू महाराज, वि. रा. शिंदे, महर्षी धोंड़ो केशव कर्वे आदि समाजसुधारकों ने जातिभेद को समाप्त करने का प्रयास किया। शासन द्वारा अनेक नियमों, अधिनियमों का निर्माण हुआ लेकिन आज भी समाज जातीयवाद से मुक्त

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 75

नहीं हुआ है। जब मनुष्य मनुष्य को हीन मानता है तब समाज का स्वास्थ्य समाप्त होता है। अत: मनुष्य के साथ मनुष्यता की तरह व्यवहार होना चाहिए।

5.7.1 समाज में जातीयवाद -

भारत सरकार द्‍वारा जातिभेद निर्मूलन के प्रयास हो रहे है। लेकिन गाँवो में अज्ञान और अंधश्रद्‍धा के कारण जातीयता दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास में बावनराम दलित जाति के हैं। उन्होंने अपने घर का परंपरागत काम त्यागकर 'फैक्ट्रि'में नौकरी की। 'फैक्ट्रि' में वे छोटे-मोटे नेता का सम्मान प्राप्त व्यक्ति थें फिर भी उनके चौथाई उम्र के सवर्ण लोग उनका आधा नाम लेकर ही पुकारते है। भारतीय समाज संस्कृति में बड़ों का आदर किया जाता है। लेकिन क्या यह बात दलित जाति को लोगों के लिए नहीं है? अत: स्पष्ट है कि दलित व्यक्ति कितने भी ऊँचे पद पर क्यों न हो समाज के अन्य दलितेत्तर लोग उसे उचित सम्मान नहीं देते।

सवर्ण लोगों की मानसिकता में आज भी उचित परिवर्तन नहीं हुआ है। वे आज भी दलितों के साथ रहना नहीं चाहते है। प्रस्तुत उपन्यास में यह बात परिलक्षित होती है। बावनराम अपने बेटे को आई. आई. टी. में पढ़ने को भेजना चाहते हैं। इसलिए वह सांसद चौधरी साहब को मिलने जाते है। वे वहाँ अन्य लोगों के साथ मेहमानवाले कमरे में ठहरते हैं। लेकिन वहाँ उनका सामान उलट-पुलट दिया जाता है, खाटे बहर निकाली जाती है। कोई कहता है - "बाहर जो टिका है ना, जात का सरकारी पण्ड़त है। पास के गाँव का ही है। अब देखना सब कुछ करा के जायेगा।"[1] सरकार ने दलितों की स्थिति में परिवर्तन के लिए लाख प्रयास किये। फिर भी सवर्ण लोग उन्हें बार -बार अपमानित करते है। सांसद चौधरी के घर बावनराम को कहा जाता है- "जो तुम हो तुम रहोगे, जो हम हैं वो हम रहेंगे। सरकारी हुक्म से तुम वो नहीं हो सकते जो हम है...।"[2]

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 35
2. वही, पृष्ठ - 68

अत: स्पष्ट है कि दलितों के प्रति सवर्णो के मन में घृणा तथा जातीयता के भाव आज भी शेष रहें हैं। जातीयवादी विचार आज भी उनके मन में ठूँस-ठूँसकर भरे हैं।

5.7.2 राजनीति में जातीयवाद -

प्रस्तुत उपन्यास में दलितों पर हो रहे अत्याचर से प्रधानमंत्री जी चिंतित दिखाई देती है। इसके विरूद्ध वे विस्तृत जनजागरण की आवश्यकता महसूस करती है। लेकिन ठाकुर राजेंद्रसिंह इससे सहमत नहीं है। उनका मानना है कि "भगवान की रेटी-मेटी तो जा नहीं सकती। तख्ती पर कच्ची स्याही से लिखी इबारत तो है नहीं की धोओ, पोतो और फिर लिख लो। जो जहाँ हैं वो वहीं रहेगा।"[1] अत: स्पष्ट है कि राजनीति में भी जातीयता की भावना बनी है। सदियों से ही दलितों को नीच और घृणास्पद समझा जाता हैं। सांसद भी चाहते है कि दलितों का उद्धार न हो।

एक सवर्ण व्यक्ति का राजनीतिक काम शर्मा नाम सवर्ण अफसर नहीं करता। लेकिन वही काम जाटव नाम का दलित मंत्री कर देता है। फिर भी वह व्यक्ति शर्मा को ही खानदानी अफसर मानता है। उसका मानना है कि अच्छा प्रशासक इतनी जल्दी काम नहीं करता। जाटव नया है इसलिए उन्होंने काम किया। अत: स्पष्ट है कि जात-पाँत के कारण अच्छा आदमी भी अच्छा नहीं कहलाया जाता बल्कि बुरे आदमी को ही अच्छा कहलाया जाता है।

5.7.3 शिक्षा क्षेत्र में जातीयवाद -

प्रस्तुत उपन्यास का प्रमुख पात्र अनुकूल आई.आई.टी. में आरक्षण से प्रवेश प्राप्त करता है। वहाँ अनुकूल जैसे दलित छात्रों का व्यंग्य से उल्लेख किया जाता है। आई.आई.टी. का गेस्ट हाऊस छात्रों के अभिभावकों को ठहरने के लिए होता है। लेकिन दलित छात्रों के अभिभावकों को वहाँ ठहराने से इन्कार किया जाता है। 'डीन' का मानना है कि इतनी खूबसूरत संस्था इन्हीं लोगों के कारण रसातल को जा रही है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 38

शिक्षा संस्थान के ज्यादातर अध्यापक जातीयवादीता से ग्रस्त हैं। वे दलित छात्रों का उच्चवर्गीय छात्रों द्वारा होनेवाला शोषण, अन्याय देखने से ज्यादा कुछ भी नहीं करते। खन्ना और उसके साथी दलित छात्रों को बार-बार अपमानित करते हैं। अनुकूल की वे टाँग तक तोड़ देते हैं। लेकिन संस्थान का प्रशासन उनका कुछ भी नहीं बिघाड़ता। रामउजागर अपनी छुट्टी कैंसिल करके फिर से संस्थान लौटना चाहता है लेकिन संस्थान की ओर से कोई भी कार्यवाही नहीं होती। सब टाल देते हैं। यह सदमा बरदास्त न होकर वह आत्महत्या करता है। जातीयता के कारण शिक्षित रामउजागर की आत्महत्या जातीयवाद की भयावहता को स्पष्ट कर देती है।

5.7.4 प्रशासन में जातीयवाद -

शासन की ओर से जनता के हितों के विविध निर्णय लिए जाते हैं। योजनाओं का निर्माण किया जाता हैं। लेकिन प्रशासन के हाथ में ही उसकी बागडौर होती है। बावनराम अपने बेटे अनुकूल को आरक्षण के तहत आई. आई. टी. में प्रवेश दिलाना चाहते है। इसी संदर्भ में कृष्णन साहब को मिलने के लिए शास्त्री भवन जाते है। वहाँ पास बनवाते समय वहाँ का बाबू कहता है- “अरे साहब, आपको कौन रोक सकता है, आप लोग तो सरकार के हकीकी दामाद हैं।”[1] प्रशासन के लोग भी दलितों को वर्ग विशेष के आदमी मानते हैं। अत: स्पष्ट है कि भारत सरकार की प्रशासन व्यवस्था में कार्यरत अधिकारी भी जातीय भेदाभेद से दूर नहीं रहे हैं। दलित हमारा स्थान लेंगे ऐसी धारणा उनके मन में बनी रहती हैं जो सारासार गलत है।

5.8 आर्थिक अभाव की समस्या -

मनुष्य के जीवन का ‘अर्थ’ ही एक महत्वपूर्ण आधार है। प्रदीर्घ काल से अपना देश पारतंज्य में रहने के कारण आर्थिक समस्या ने गंभीर रूप धारण किया है। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ है- रोटी, कपड़ा, मकान और स्वास्थ्य आदि को पूरा

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 74

करना 'अर्थ' के सिवा संभव नहीं है। आजादी के बाद गरीब लोगों की स्थिति में बदलाव के लिए सरकार द्वारा विविध योजनाओं का निर्माण किया जा रहा है। लेकिन सच्चाई यह है कि गरीब लगातर गरीब होता गया और अमीर ज्यादा अमीर बन गया। अत: स्पष्ट है कि सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचता ही नहीं।

प्रस्तुत उपन्यास में अर्थाभाव के कारण लोगों के सामने आनेवाली समस्याओं का वर्णन मिलता है। दलित लोगों के गाँव सिरसाँ का वर्णन आया है। अर्थाभाव के कारण इस गाँव की हालत खराब हुई है। लोगों को रहने के लिए अच्छे घर न होने से ज्यादातर लोग झोपड़ियों या कच्चे खपरैलवाले घरों में रहते हैं। लोगों का जीवन निम्नस्तर का होने से वे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असहाय है। लोगों की हालत इतनी खराब हो गयी है कि एकाध मेहमान आये तो उसकी ठीक तरह से व्यवस्था होना मुश्किल हो जाता है। दलित लोगों का जीवन हमेशा से ही अभावों से ग्रस्त रहता है। बच्चों द्वारा कमाये पाँच-सात रूपयें ही ऐसे परिवारों का आधार है। अत: स्पष्ट है कि दलित लोग अर्थाभाव के कारण अपनी प्राथमिक जरूरतें भी पूरी नहीं कर सकते। प्राथमिक सुविधाओं के अभाव में दलित लोग बदतर हालत में अपना जीवनयापन करने के लिए विवश दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित भारतीय प्रौद्योगिकी शिक्षा संस्थान में पढ़नेवाले गरीब परिवार के छात्रों को आर्थिक कठिनाईयों से सामना करना पड़ता है। संस्थान से प्रकाशित बुलेटिन से यह बात स्पष्ट होती है। उसी बुलेटिन का एक अंश - "इस संस्थान में वैसे तो वे सभी छात्र एस. सी. एस. टी. हैं जो गरीब, साधन हीन और साधारण परिवारों से आने के कारण अपने रहन-सहन का स्तर अन्य उच्च वर्ग के छात्रों के समान बनाये रखने में नितान्त असमर्थ हैं।"[1] वाल्मिकी जैसे छात्र अपने प्राथमिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर सकते। आर्थिक अभाव के कारण ही कुछ छात्रों

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 302

को संस्थान तक छोड़ना पड़ता है। बीमारी के कारण आई. आई. टी. में पढ़नेवाला राजू अस्पताल में दाखल होता है। उसे देखने के लिए आनेवाले उसके पिताजी को देर हो जाती है क्योंकि पैसों का प्रबन्ध नहीं हुआ था। उनकी छोटी-सी दुकान थी। जो थोड़ी-बहुत जमीन थी वह राजू की पढ़ाई के लिए बेच दी थी। राजू के माता-पिता इस आस में थे कि राजू आयेगा और उन्हें सुख देगा लेकिन राजू की मौत हो गई। अनुकूल के पास बीमार माँ को देखने के लिए जा सके इतने भी पैसे नहीं होते। वह मेस मैनेजर से सूद पर पैसे लेता है। अत: स्पष्ट है कि आई.आई.टी. में पढ़ रहे गरीब छात्रों का जीवन अर्थाभाव में बीतता है। अर्थाभाव के कारण ही उन्हें अनेक समस्याओं से सामना करना पड़ता है। दलितों की उन्नति में यह एक प्रमुख समस्या है जो रोड़ा बनकर उत्पन्न होती है।

5.9 शिक्षा के प्रति अनास्था की समस्या -

देश में शिक्षा की महान प्राचीन परंपरा विरासत के रूप में मिली है। आधुनिक युग में व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की भूमिका अहम बनती जा रही है। आज व्यक्ति के जीवन में मूलभूत परिवर्तन करने का माध्यम शिक्षा ही है। शिक्षा से ही व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एंव अध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, व्यक्तित्व के निर्माण में मदद मिलती है। लेकिन आधुनिक युग में शिक्षा दिन-ब-दिन मँहगी होती जा रही है। गरीब तथा निम्न वर्ग को अर्थाभाव के कारण शिक्षा प्राप्त करना कठिन होता जा रहा है। कॉन्वेंट स्कूलों में, उच्चशिक्षा संस्थानों में प्रवेश प्राप्त करना सिर्फ उच्चवर्गीय लोगों तक सीमित होता दिखाई दे रहा है।

विवेच्य उपन्यास में अर्थाभाव, परंपरागत मान्यताएँ आदि कारणों से शिक्षा से वंचित रहनेवाले लोगों का चित्रण मिलता है। दलित लोग अपने बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते। उनका मानना है कि कलेक्टर थोड़े ही बनना है। "उन बच्चों में कुछ होशियार भी थे, लेकिन उनमें से अधिकतर चौथी से आगे नहीं पढ़ पाये थे। एक-दो

छठीं जमात तक गये थें। वहाँ तक पहुँचते उनके माँ-बाप का सब्र टूट गया था।"[1] अत: स्पष्ट है कि दलित लोग शिक्षा से दूर रहते है। दलित लोगों में ऐसे बच्चे भी है कि जिन्होंने स्कूल तक नहीं देखा है। ऐसे बच्चे पढ़ाई करने के अलावा दुकानों में छोटे-मोटे काम करके घरवालों की सहायता करते हैं। अत: स्पष्ट है कि जिन बच्चों की कमाई से घर चलते हैं, वे लोग अपने बच्चों की शिक्षा-व्यवस्था कैसे कर सकते हैं। इसके पीछे अनेक कारणों में से एक आर्थिक अभाव भी है।

गाँव के लोगों में पढ़ाई को लेकर अनेक भ्रम दिखाई देते हैं। "पढ़े से मूड घूम जात है... रात - दिन सैतान दौड़ात है।"[2] लड़कियों की पढ़ाई की स्थिति और भी बदतर है। लड़के तो चौथी या छठीं कक्षा तक ऐसे - तैसे पढ़ भी लेते हैं लेकिन लड़कियों को पढ़ाया ही नहीं जाता। रामउजागर की बहन नीलम्मा से कहती है- "गाँव में कोई लड़की नाहीं पड़त ... महतारी कहित है लाँछन लग जात है।"[3] उनमें यह भी भ्रम है कि लड़के लड़कियाँ एक-साथ पढ़ने से आग लग जाती है। ऐसी स्थिति में भी एकाध लड़की पढ़ भी गई तो उसका ब्याह होना मुश्किल होता है। बावनराम चौधरी अपनी बेटियों को पढ़ाना चाहते हैं तो उनकी पत्नी विरोध करती हैं- "पढ़ी-लिखी बेटियों को ब्याहनेवाला कौन बैठा है, तुम्हारी बिरादरी में। दो-चार जमात पढ़कर घर आ बैठी थी। घर बैठे-बैठे पन्द्रहियों साल गुजर गये थे।"[4] गाँव के लोगों का मानना है कि शहर में जादू की पढ़ाई होती है। वहाँ की पढ़ी-लिखी औरते आदमी को बकरा बना देती है। ऐसी कठिन परिस्थिति में पढ़ाई करते हुए रामउजागर, अनुकूल आदि दलित छात्र सामने आते हैं। अनुकूल के पिताजी उसे पढ़ाई के लिए घर से दूर भेजना चाहते है। लेकिन अनुकूल की माँ और रिश्तेदार अनुकूल को घर से बाहर जाकर पढ़ने को विरोध करते हैं। अनुकूल की माँ उसके पिता को कहती है- "घर में रखकर चाहे डिप्टी कलट्टरी की

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 11 - 12
2. वही - पृष्ठ - 203
3. वही - पृष्ठ - 210
4. वही - पृष्ठ - 11

पढ़ाई पढ़ा लो पर बेटे को बाहर न भेजो।"[1]

अत: स्पष्ट है कि गाँव के दलित बच्चों की पढ़ाई के संबंध में सवर्ण लोगों द्वारा अनेक भ्रम फैलाए गए हैं ताकि वे अपने बच्चों को अपनों से दूर पढ़ाई के लिए न भेजे। पढ़ाई को लेकर ऐसे लोगों में कुछ परंपरागत मान्यताएँ भी प्रचलित हैं। साथ ही दलितों को आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ता है। इसलिए भी वे शिक्षा से दूर रहना पसंद करते हैं।

सरकार द्वारा दलित एवं पिछड़े वर्ग को आरक्षण की सुविधा दी गई है। इसके अंतर्गत आई. आई. टी. जैसी उच्चस्तरीय शिक्षा संस्थान में रामउजागर, अनुकूल, बाबूराम, रवि आदि अनेक दलित छात्र शिक्षा लेते दिखाई देते हैं लेकिन यहाँ भी उन्हें अनेक कठिनाईयों से गुजारना पड़ता है। वे अपने मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर सकते। इस जगह उन्हें सवर्णो द्वारा अमानवीय अत्याचार का सामना करना पड़ता है। अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है। उच्च शिक्षा के प्रति आज भी ग्रामीण गरीब, दलित लोगों में अनास्था दिखाई देती है। इसका और एक कारण है कि अधिकतर ग्रामीण स्वयं अज्ञानी और अनपढ़ रहें हैं।

5.10 शिक्षा क्षेत्र में मूल्यों का विघटन तथा भ्रष्टाचार -

आजादी के बाद भारत में शिक्षा का प्रसार बड़े पैमाने पर होता रहा है। विद्यालय तथा विश्वविद्यालय की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है साथ ही शिक्षित लोगों की संख्या में वृद्धि हो गयी है लेकिन जब शैक्षिक मूल्यों की बात है तो परिस्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती। आज शैक्षिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं। इसी कारण शिक्षा क्षेत्र में विविध समस्याएँ दृष्टिगोचर होती है।

देश में विविध जाति, धर्म, संप्रदाय तथा वंश के लोग रहते हैं जो 'सर्वधर्म समभाव' को मानते है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित आई.आई.टी. शिक्षा संस्थान में ऐसा

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 15

कोई मूल्य दिखाई नहीं देता। रामउजागर बीमारी से स्वस्थ्य होकर संस्थान में वापस आता है तो खन्ना और कुछ अध्यापक इस बात की कोशिश करते हैं कि उसे संस्थान में पुन: प्रवेश न मिल पाये। अंतत: वैफलग्रस्त होकर रामउजागर आत्महत्या करता हैं। इसी तरह दलित छात्रों पर सवर्ण मानसिकता से युक्त छात्र और अध्यापक अमानवीय अत्याचार करते हैं। उनके अत्याचार के कारण विवश होकर कुछ दलित छात्र संस्थान छोड़कर गाँव चले जाते हैं। जो रहते है उनको मारपीट होती है। उसमें किसी की टाँग टूट जाती है तो कोई आत्महत्या करने के लिए विवश होता है।

आई.आई.टी. के ज्यादातर अध्यापक विदेश से शिक्षा प्राप्त कर आए हैं। उनपर विदेशी संस्कृति तथा तौर - तरिकों का प्रभाव है। वे यहाँ आकर असहिष्णु हो जाते हैं। वे दलित छात्रों को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं। डिप्टी डायरेक्टर प्रो.आठवले से कहते हैं - "ये लोग हम लोगों को लिए कितना बड़ा सिर-दर्द है। हमारे स्टुडेण्ट्स की खपत इण्डस्ट्रीज मैं है... इण्डस्ट्री इन लोगों से घृणा करती है। इनकी वजह से वातावरण दूषित होता है।"[1] यह अध्यापक उच्चवर्गीय छात्रों द्वारा दलित छात्रोंपर होनेवाले अन्याय-अत्याचार के खिलाफ कुछ नहीं कहते और करते उल्टे उनका साथ देते दिखाई देते हैं। डीन का मानना है कि हम यहाँ रहकर ऊँची जातियों को नाराज करके खतरा नहीं मोल सकते।

भारत देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है। इसी भाषा के बल पर ही देश को स्वतंत्र्यता प्राप्त हुई। लेकिन आई. आई. टि. में हिंदी को हीन दृष्टि से देखा जाता है। यहाँ के छात्र अंग्रेजी अपनी मातृभाषा की तरह बोलते हैं तो मातृभाषा को विदेशी भाषा की तरह। गाँव से आनेवाले छात्रों के रिश्तेदारों से अन्य छात्र अंग्रेजी में ही बोलते हैं। इन लोगों का मानना है कि हिंदी में केवल गालियाँ दी जा सकती है या सब्जी खरीदी जा सकती है। यहाँ हँसते है तो भी अंगेजी में,अंग्रेजी बोलनेवाले लड़के जब हँसते थे तो वे

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 271

अंग्रेजी में ही हँसते हुए महसूस होते थें। वह हँसी उपरी अपरिचित - सी लगती थीं। अत: पढ़े-लिखे लोगों का अपने देश के राष्ट्रभाषा की तरफ देखने का हीन दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता हैं।

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल पद्धति पर निर्भर थी। गुरु और शिष्य एक साथ रहते थे। गुरु को चरित्रसंपन्न माना जाता। वहाँ का वातावरण पवित्र था।शिक्षा में नैतिकता को विशेष महत्वपूर्ण था। आजकाल के छात्रावास में पवित्रता, नैतिकता होगी ही ऐसा नहीं कहा जा सकता। आई.आई.टी. के छात्रावास में रहनेवाले खन्ना और साथी खुलेआम सिगार का सेवन करते हैं। कुछ छात्र शराब के अधीन हो गये हैं। तो कई कल्बों में जाकर वहाँ की लड़कियों के साथ डान्स भी करते हैं। आजकाल के छात्रों की तरह कुछ अध्यापक भी चरित्र संपन्न दिखाई नहीं देते। अध्यापक सीधे तरह से किसी से कुछ नही लेंगे लेकिन गिफ्ट्स के नाम पर उसका स्वीकार करेंगे। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित कुछ अध्यापक बड़े-बड़े घर के लड़को से, उनकी कंपनियों से गिफ्ट्स का स्वीकार करते हुए दिखाई देते है। यह एक तरह का भ्रष्टाचार ही है।

अत: स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा संस्थानों के छात्र तथा अध्यापकों पर पाश्चात्य संस्कारों का प्रभाव हैं। अध्यापकों में बढ़ रही लालची वृत्ति अध्यापक जैसे पवित्र कार्य पर लगा कलंक ही है।

5.11 शिक्षा क्षेत्र में राजनीति की समस्या -

अपने देश में शिक्षा लेकर वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर विदेश जाने की आस लगाए बैठते हैं। इसके लिए शिक्षा क्षेत्र में राजनीति का आना जिम्मेदार है। आज उच्चशिक्षित, बुद्धिमान, प्रतिभाशाली युवक सिफारिश तथा रिश्वत देने के अभाव के कारण सुयोग्य रोजगार पाने में असमर्थ है। शिक्षा क्षेत्र में प्रतिभा को न देखकर सिफारिश को देखा जाता है। इसके कारण आज देश के प्रतिभावंत विदेश चल जाते हैं। साथ ही कुछ लोग ज्यादा पैसों के लालच में भी विदेश का मार्ग अपनाते हैं।

विवेच्य उपन्यास में भारतीय प्रौद्योगिकी शिक्षा संस्थान का चित्रण पाया जाता है। यहाँ देश तथा विदेश से शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्र आते हैं। यह छात्र शिक्षा पूरी करके विदेश जाने को प्राथमिकता देते हैं। इसके लिए हमारे देश के राजनीतिज्ञ एवं बुद्धिजीवी जिम्मेदार है। इस संस्थान में काम करनेवाले बुद्धिजीवी अपने यहाँ कोई परिवर्तन करना नहीं चाहते, जातिगत भेदभाव को मिटाने का प्रयास नहीं करते उल्टे बढ़ावा ही देते हैं। सच तो यह है कि उन्हें अपने राष्ट्र, अपना समाज तथा अपने कर्तव्य के प्रति कोई मानवीय सरोकार नहीं है। वे संस्थान के दलित तथा निम्नवर्ग के छात्रों पर होनेवाले अमानवीय अत्याचार के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करते। एकमात्र प्रो.मलकानी जैसे अध्यापक दलित, निम्नवर्ग के छात्रों को प्रोत्साहित करके पढ़ाई के लिए प्रेरित करते हैं। लेकिन उनके बारे में भी आई.आई.टी. के अन्य अध्यापक तथा अधिकारी कों का दृष्टिकोण अच्छा नहीं है। वे उन्हें भला-बूरा कहते हैं।

मानसिक असंतुलन के कारण एक साल के 'लीव' पर गए छात्र रामउजागर को संस्थान में फिर से प्रवेश नहीं दिया जाता। दलित हितैषी प्रो. मलकानी राम उजागर के प्रवेश के संबंध में एस.यू.जी.सी. कमेटी की मिटिंग में उसका पक्ष लेते है। इस संदर्भ में एस.यू.जी.सी. के चेअरमैन प्रो.आठवले कहते हैं- "प्रोफेसर मलकानी के बोलने में स्वाभाविकता थी। काफी प्रभावशाली बाते कहीं। सब फैन्सिसिटर्स के चेहरों पर मलकानी साहब के चेहरे का रंग नजर आने लगा था। अगर वोटिंग हो जाती तो रामउजागर को कोई रोक नहीं सकता था।"[1] लेकिन यही प्रो. आठवले चेयरमैन सीनेट से मशवरा करना जरूरी है ऐसा कहकर रामउजागर के प्रवेश को टाल देते हैं। इस तरह की राजनीति करके रामउजागर को संस्थान में प्रवेश टाला जाता है। इस संदर्भ मै डिप्टी डायरेक्टर का मानना है कि आई.आई.टी. के छात्रों को इण्डस्ट्री में रोजगार मिलता है और उद्योगकर्मी दलितों से घृणा करते हैं। अन्य छात्र भी इन लोगों की उपस्थिति से

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - **271**

सहज अनुभव नहीं करते। डिप्टी डायरेक्टर और एस.यू.जी.सी. के चेयरमैन रामउजागर के संदर्भ में तब तक मिटिंग न करने का निर्णय लेते हैं जब तक प्रो. चंद्रा विदेश से लौटकर नहीं आते क्योंकि उस कमेटी में प्रो.मलकानी प्रो.चंद्रा की जगह थे। यह देखकर लगता है कि सिर्फ राजनीतिज्ञों में राजनीति नहीं होती तो इन बुद्धिजीवियों द्वारा अपनायी जानेवाली राजनीति राजनीतिज्ञों से भी खतरनाक होती है। इसी राजनीति के परिणामस्वरूप रामउजागर वैफलग्रस्त होकर आत्महत्या करता है।

अत: स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा संस्थानों में गंदगी भरी राजनीति चलती है। इसी कारण शिक्षा व्यवस्था विषाक्त हो चुकी है। शिक्षालय ज्ञानदान के केंद्र न होकर राजनीति के केंद्र बन चुके है। अकेले प्रो. मलकानी जैसे अध्यापक के विरोध करने से शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन असंभव है। ऐसे अनेक मलकानी इकट्ठा होंगे तब ही शिक्षा क्षेत्र राजनीतिक दाँवपेचों से दूर रहेंगें।

5.12 रैगिंग : एक विकृत समस्या -

देश में विज्ञान और तकनीकी की उच्च शिक्षा देनेवाले शिक्षा केंद्रों में से कानपुर की आई.आई.टी. एक महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थान है। विवेच्य उपन्यास में लेखक ने आई. आई. टी. के शैक्षिक वातावरण को चित्रित किया है। इसके माध्यम से ऐसी संस्थाओं में चलनेवाली विकृतियों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। अनेक उद्देश सामने रखकर ऐसी संस्थाओं की सरकार द्वारा स्थापना की गई। लेकिन आज ऐसे संस्थान अपने उच्च उद्देश्यों से दूर हटते नजर आते हैं।

आई.आई.टी. में 'रैगिंग' की विकृति दिखाई देती है। यहाँ पुराने छात्र नए छात्रों पर रैगिंग करते हैं। इससे एक बार छात्र के मुँह से खून निकल आता है। इस बहाने सवर्ण छात्रों द्वारा दलितों पर अमानवीय अत्याचार होते हैं। संस्थान के अध्यापक और अधिकारी ऐसे छात्रों के खिलाफ कोई भूमिका ही नहीं लेते। उल्टे वे उनके अत्याचारों को बढ़ावा देकर भेदाभेद की नीति अपनाते हैं। इससे तंग आकर दलित छात्र आत्महत्या करने पर मजबूर होते हैं। कुछ छात्र संस्थान छोड़कर जाने के लिए विवश

दिखाई देते हैं। अनुकूल संस्थान के वातावरण के संदर्भ में कहता है- "पहले मैं यहाँ से भाग जाना चाहता था। यहाँ का वातावरण मांसाहारी वनस्पति जैसा है। मुझे भय लगने लगता था, उसके पास से गुजरूँगा, पत्ते बंन्द हो जायेंगे और चूस डालेंगे।"[1] इससे आई.आई.टी. के भयावह वातावरण पर लेखक ने प्रकाश डाला है। यहाँ के कुछ छात्र क्लब में जाते है, घण्टों पी लेते हैं, क्लब की लड़कियों के साथ डान्स करते हैं।

अत: स्पष्ट है कि देश की उच्चस्तरीय तकनीकी शिक्षा संस्थानों में भी विकृत प्रवृत्तियों का प्रवेश हुआ है। शिक्षा का जो मूल उद्देश है व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, उसके चरित्र का निर्माण करना, उससे एक आदर्श और उच्चशिक्षित भारतीय बनाना जैसे उद्देश्यों से आज के कई छात्र तथा अधिकतर सवर्ण मानसिकता से युक्त अध्यापक कोई सरोकार रखते दिखाई नहीं देते।

5.13 धन के लालच की समस्या -

देश के उच्चस्तरीय शिक्षा संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके विदेश चला जाना आज फैशन बन गयी है। देश के सामने इस समस्या ने भयावह स्थिति उत्पन्न की है। देश की शासन व्यवस्था शिक्षा व्यवस्था पर करोंडों का खर्चा करती है। लेकिन उच्च शिक्षित अधिकतर छात्र देश की सेवा करने के अलावा विदेश जाकर अपनी बुद्धि का सौदा करके धन अर्जित करते हैं। वे रहेंगा यहाँ, पढ़ेंगे यहाँ और नौकरी के लिए जाएँगे विदेश। वे यह बात भूल जाते हैं कि विदेशी सरकार तथा कंपनियाँ उनके ब्रेन का इस्तेमाल अपने स्वार्थों के लिए करती हैं और उन्हें डालरों के रूप में पैसा देती हैं। लेकिन काम होने के बाद झटक देते हैं तब उन्हें अपना देश याद आता हैं।

विवेच्य उपन्यास में अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षा संस्थान आई.आई.टी. का चित्रण आया है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त करनेवालों को देश-विदेश में सम्मान से देखा जाता है। विदेशी सरकार तथा कंपनियाँ करोड़ों के पॅकेज देकर उन्हें अपनी ओर

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 250

आकर्षित करतें हैं। इसके पिछे सुनियोजित षढ्यंत्र दिखाई देता है। यह विदेशी हमारे देश के शिक्षित युवाओं को अपने देश में ले जाकर उन्हें एक मशीनी पुर्जे में रूपांतरित कर देते हैं। ऐसे लोग अपनी अस्मिता खो देते हैं, देश के प्रति कर्तव्य को भूल देते हैं। आई. आई.टी. में अच्छे अंक प्राप्त करनेवाले लगभग सभी छात्र विदेश जाने को प्राथमिकता देते हैं। विदेशी लोग इनकी बुद्धि का उपयोग अपनी प्रगति तथा कामयाबी के लिए करते हैं लेकिन उनसे आत्मीयता नहीं बना पाते। काम होने के बाद पैसा देकर वापस भारत भेज देते हैं। इस संदर्भ में प्रो. मलकानी कहते है- "क्या वे लोग भी हमें अस्पृश्य समझकर हमारे खिलाफ घृणा के बीज नहीं बो रहे? वे हमें बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहते। क्या हम उनकी नजरों में पढ़े-लिखे, वैज्ञानिक और धन-लोलुप मजदूर नही हैं? जब उन्हें जरूरत होती है तो दिहाड़ी पर हमें बुला लेते हैं और हम खुशी-खुशी दौड़े चले जाते हैं। कसकर काम कराते हैं और फिर डालरो में भुगतान करके बैरंग वापिस भेज देते हैं।"[1] अत: यह दिखाई देता है कि विदेशी लोग सिर्फ काम के लिए देश के प्रतिभाशालियों का उपयोग करते हैं लेकिन उनका हमारे प्रति देखने का दृष्टिकोण संकुचित ही है। वे भारतीय लोगों को बराबरी का स्थान नहीं देना चाहते हैं। इतना होकर भी पैसों की लालच में अनेक युवक, प्रतिभाशाली, बुद्धिजीयों का विदेश जाना निरंतर जारी है।

अत: स्पष्ट है कि देश में शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों पर यह प्रतिबंध लगाना आवश्यक है कि उच्च शिक्षा के बाद पाँच साल तक उन्हें भारत में काम करना जरूरी होगा। तब ही देश प्रगति की ओर बढ़ेगा। उसका उचित मुआवजा भी ऐसे छात्रों को देना आवश्यक है। यहाँ के उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों की अकसर शिकायत रहती है कि अपने ही देश में उन्हें ठीक सम्मान नहीं मिलता। शिक्षा और अनुसंधान की सामग्री नहीं मिलती और धन भी सही नहीं मिलता।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 269

5.14 आत्महत्या की समस्या -

मनुष्य जब जीवन में आनेवाली कठिनाईयों का सामना नहीं कर सकता तब वह जीवन से पलायन करता है। उसे लगता है कि अब जीवन में आत्महत्या के सिवा कोई विकल्प बचा ही नहीं है। आत्महत्या के सामाजिक, आर्थिक, मनौवैज्ञानिक ऐसे अनेक कारण होते हैं। अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ, अर्थिक अभाव, रोजगार की कमी, भूख तथा अन्य चीजों से वंचित होना, मानसिक विकार, बिघड़ा स्वास्थ्य, कुरूपता आदि बातें व्यक्ति को आत्महत्या की ओर ले जाती है। पद, प्रतिष्ठा, प्रेम में असफलता, मन की उलझन, अपमान की घटनाएँ, रिश्तों में दरार आदि कारणों से आदमी आत्महत्या की ओर प्रवृत्त होता है।

विवेच्य उपन्यास में आई.आई.टी. के शैक्षिक वातावरण का चित्रण है। अपने बेटे के प्रवेश के संबंध में मिलनेवाले बावनराम को कृष्णन साहब वहाँ के वातावरण की कल्पना देते हैं। वहाँ हरसाल कोई ना कोई गड़बड़ होती हैं। सुसाईड़ होता है। सासंद चौधरी कहते हैं- "आई.आई.टी. में पढ़ना हर एक के बूते की बात नहीं। बच्चे पर इतना तनाव रहता है कि हर साल एक-दो, एक-दो आत्महत्याएँ हो जाती हैं। सुना, एक से एक होशियार बच्चा आता है। होशियारों - होशियारों के बीच ठना मुकाबला या तो मौत निबटती है या तास्फिया।"[1] अत: पढ़ाई में पिछड़ने का डर छात्रों के मन में होता है। संस्थान के इस भयावह वातावरण में तनाव के कारण छात्र आत्महत्या करते हैं। मोहन के आत्महत्या की तहकिकत करने आया पुलिस अधिकारी कहता है- "तीसरा साल है और यह तीसरी लाश है। नहीं पढ़ना तो मत पढ़ो।"[2] अत: स्पष्ट है कि आई.आई.टी. में तनाव, भयावह वातावरण आदि कारणों से हरसाल एकाध छात्र की आत्महत्या होती है।

रामउजागर आत्मसम्मानी तथा संघर्षशील छात्र है। दलित होने के कारण

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 72
2. वही - पृष्ठ - 121

उसे हमेशा तिरस्कृत होना पड़ता है। संस्थान में सवर्ण छात्र तथा अध्यापक दलित छात्रों पर अमानवीय अत्याचार करते हैं। रामउजागर आत्महत्या करके अपने जीवन को खत्म करता है। उसे लगता है कि हर दलित छात्र की नियति फाँसी के फँदे से लटककर आत्महत्या करने की है। क्षोभ-प्रतिहिंसा के कारण वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। मानसिक संघर्ष तीव्र होने से उसमें भयकंर असुरक्षा बोध उत्पन्न होता है। और वह आत्महत्या का मार्ग अपनाता है क्योंकि वह परिस्थितियों से समझोता नहीं कर सका। उसके सामने कोई रास्ता ही नहीं बचा। हम लोग परिस्थिति से समझोता कर लेते हैं इसलिए हम बने रहते हैं। परंतु रामउजागर ऐसा नहीं कर सका। अंततः स्पष्ट है कि व्यवस्था से संबंधित लोग रामउजागर जैसों का मनोबल तोड़ने में ही अपना प्रधान उद्देश्य मानकर चलते है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि देश का भविष्य छात्रों पर निर्भर होता है।अगर छात्र ही वैफलग्रस्त होकर आत्महत्या करने लगेंगे तो निश्चित ही देश का भविष्य अंधकारमय होगा। छात्रों मे सुरक्षितता की भावना होना जरूरी है। शिक्षा तथा नौकरी के क्षेत्र में भी असुरक्षितता होने से अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उक्त सभी समस्याएँ गिरिराज किशोर का उपन्यास 'परिशिष्ट' में विशेष रूप से परिलक्षित होती है।

निष्कर्ष -

गिरिराज किशोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उन्होंने 'परिशिष्ट' उपन्यास में दलित जीवन की समस्याएँ, आरक्षण, दलित छात्रों का शोषण, शिक्षा संस्थानों में फैली बुराईयाँ आदि का चित्रण किया हैं। किसी भी लेखक की नैतिक मान्यताएँ, दृष्टिकोण आदि समाज की मनोवृत्ति और विचारधाराओं से संपृक्त होती है। गिरिराज किशोर भी अपने युग की मनोवृत्ति और विचारधारा से अछूते नहीं रहे। आज साहित्य में नारी विमर्श और दलित चेतना चर्चित विषय हैं। प्रस्तुत उपन्यास में दलितों का वास्तविक जीवन उद्घाटित हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दलित लोगों से संबधित नारी शोषण, अंधविश्वास, व्यसनाधीनता, बालविवाह, छुआछूत, जातीयवाद, आर्थिक अभाव आदि समस्याएँ तो शिक्षा व्यवस्था से संबधित शिक्षा की समस्या, शिक्षा में राजनीति, शिक्षा क्षेत्र में मूल्य विघटन तथा भ्रष्टाचार, शिक्षा क्षेत्र में राजनीति, रैगिंग, धन के लालच, आत्महत्या, आरक्षण आदि समस्याओं को रेखांकित किया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से नारी पुरुषों के अत्याचार का शिकार हुई है। आधुनिक युग में भी इस स्थिति में कोई मूलभूत परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता है इसलिए समाज में नारी आज भी शोषित दिखाई देती है। इसका चित्रण विवेच्य उपन्यास में हुआ है। अंधविश्वास की समस्या परंपरा से चली आ रही है। भारतीय लोग चाहे अपने आप को कितने भी प्रगतिशील मानते हो लेकिन अंधविश्वास का प्रभाव वर्तमान जीवन पर दिखाई देता है। शिक्षा के प्रसार से इसकी तीव्रता थोडी कम हो रही है। आज समाज में व्यसनों का व्यापक प्रचार, फैशन, प्रतिष्ठा के तौर पर हो रहा है। व्यसनाधीनता के कारण आपसी संबंधों मे दरारें पैदा हो रही है। परिवारों का विघटन होता है। आज विवाह संस्था में भी अनेक बदलाव आ रहे हैं। फिर भी दलित समाज में बालविवाह होते हैं। इसके मूल कारण अज्ञान एवं अशिक्षा ही है।

प्राचीन काल से भारतीय समाज में जातिव्यवस्था का प्रचलन दिखाई देता है। 'परिशिष्ट' उपन्यास में प्रतिबिंबित दलितों की ओर देखने की सवर्णो की घृणित मानसिकता हैं उसमें आज भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। सदियों से दलितों को अछूत माना गया है। सवर्ण दलितों का स्पर्श भी अपवित्र मानते हैं। जातीयवादी संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण आपसी तनाव, शत्रुत्व, संघर्ष की स्थिति निर्माण होती है। आई.आई.टी. जैसी उच्च शिक्षा संस्थानों में भी जातीयवाद तथा भेदाभेद की भावना दिखाई देती है। अत: जातिभेद की भावना नई पीढ़ी में भी पनपती दिखाई दे रही है। जातिव्यवस्था एक मानवीय समस्या ही नहीं तो सामाजिक कलंक भी है।

दलित तथा निम्नवर्ग की स्थिति में शिक्षा के माध्यम से सुधार लाने के लिए

आरक्षण की सुविधा दी गई। लेकिन इससे हजारों वर्षों से विशिष्टता और उत्कृष्टता का बोध पालनेवाले सवर्णों को मानसिक रूप में आहत किया है। दलितों के प्रति उनके मन में नए किस्म की घृणा और क्रोध की अभिव्यक्ति हुई।

आर्थिक अभाव के कारण दलित, निम्नवर्ग तथा गरीब लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा करने में असमर्थ है। इसी कारण कुछ छात्र अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ने के लिए विवश हैं। आधुनिक युग में शिक्षा दिन-ब-दिन महँगी होती जा रही है। आर्थिक अभाव के कारण दलित तथा निम्नवर्ग के लोग शिक्षा से वंचित रहते हैं। दलित शिक्षा से दूर रहें इसलिए सवर्णों द्वारा अनेक भ्रम फैलाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में अगर कोई दलित शिक्षा प्राप्त करता भी है तो उसे अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है। यह स्थिति विवेच्य उपन्यास में चित्रित आई.आई.टी. जैसी शिक्षा संस्था में दिखाई देती है। आजकाल के शिक्षा केंद्र तथा शिक्षक नैतिकता, पवित्रता से कोंसों दूर है। यह लोग पैसों के लिए विदेश जाने को प्राथमिकता देते हैं। शिक्षा केंद्रों में रैगिंग, सिगार, शराब का सेवन, कल्ब संस्कृति जैसी विकृतियाँ दिखाई देती हैं। आई. आई.टी. में दलित छात्रों पर अमानवीय अत्याचार होते हैं। उससे किसी की टाँग टूट जाती है, कोई पागल बन जाता है तो कोई आत्महत्या करता है। कई छात्र संस्थान छोड़कर चले जाते है। इससे बुद्धिजीवीयों द्वारा अपनायी जानेवाली राजनीति राजनीतिज्ञों से भी भयानक साबित होती है।

अत: स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सड़न पैदा हुई है और वह गंदगी से भरी हुई है। दलितों को भी उच्च शिक्षा का अधिकार मिला तो है लेकिन इस प्रकार की शिक्षा ही वे न ले ऐसी व्यवस्था भी कार्यरत है। 'परिशिष्ट' उपन्यास में उक्त सभी समस्याएँ विशेष रूप से परिलक्षित होती हैं। लेखक ने उक्त समस्याओं का चित्रण सहज-सरलता से और प्रसंगानुरूप किया है। आज के समाज में दलितों के प्रति जो रवैया अपनाया जा रहा है उसे रू-ब-रू कराने में गिरिराज किशोर पूरी तरह से सफल हुए है।